क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 1 अंक: 253, सोमवार, 08 अक्टूबर, 2018, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सार समाचार

स्कूल के सामने गंदगी से गुस्साए छात्रों ने किया रोड जाम

फरीदाबाद। फरीदाबाद की डबुआ कॉलोनी डी ब्लॉक स्थित एक प्राइवेट स्कूल के सामने गंदगी रहने को लेकर नाराज छात्रों ने शनिवार सुबह नौ बजे डबुआ चौक पर जाम लगा दिया। बच्चों के इस हंगामे के चलते लगभग 30 मिनट तक जाम के हालात बने रहे। हंगामा कर रहे बच्चों का कहना है भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के बावजूद बीते लगभग 2 साल से सफाई कर्मचारी उनके स्कूल के सामने ही कूड़ा डालते हैं। इस ब्लॉक में दो स्कूल हैं साथ में ही एक प्ले-वे स्कूल भी है। इस बारे में कई बार स्थानीय पार्षद को लिखित में शिकायत देने के बावजूद भी यहां कूड़ा डाला जा रहा है। आरोप है कि सफाई कर्मचारी यहां से कूड़ा उठाने के बजाय उसमें आग लगा देते हैं। विधायक नगेंद्र भड़ाना को भी इस बारे में सूचित कर दिया गया था, उसके बावजूद भी कूड़े का ढेर रहता है। इस गंदगी के चलते कई छात्र बीमार हो चुके हैं। स्कूल की प्रिंसिपल कहना है कि इस कूड़े के चलते कई छात्र बीमार हो गए हैं कुछ बच्चे तो यहां फैली गंदगी के चलते अब आते ही नहीं हैं। इस कारण छात्रों का बहुत बड़ा नुकसान हो रहा है। स्कूल के सामने गंदगी से गुस्साए छात्रों ने आज बाबा चौक पर रोड जाम किया और सफाई कराने के लिए प्रशासन से मांग की है। खास बात यह है कि जाम लगाने के बाद भी इसे खुलवाने के लिए शासन-प्रशासन से कोई अधिकारी मौके पर नहीं पहुंचा।

बेटी से छेड़छाड़ का विरोध करने पर गूंगे व्यक्ति ने महिला का गला काटा

नोएडा, एजेंसी। नोएडा में थाना सेक्टर-39 क्षेत्र के सेक्टर-108 में रहने वाली एक महिला की शुक्रवार रात उसके पड़ोस में रहने वाले एक गूंगे व्यक्ति ने धारदार हथियार से गला काटकर हत्या कर दी। बताया जाता है कि आरोपी महिला की बेटी के साथ अश्लील हरकत करता था, जिसका वह विरोध कर रही थी। इसी वजह से आरोपी ने महिला की हत्या कर दी। पुलिस उपाधीक्षक (नगर) अवनीश कुमार ने बताया कि सेक्टर-108 में रहने वाली गंगा रानी की शुक्रवार रात को उसके पड़ोस में रहने वाले इंद्राज ने धारदार हथियार से गला काटकर हत्या कर दी। इंद्राज गूंगा है। इस मामले में मृतका के बेटे ने थाना सेक्टर-39 में रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि मृतका के बेटे का आरोप है कि उसके पड़ोस में रहने वाला इंद्राज उसकी बहन के साथ अश्लील हरकत करता था, जिसका उसकी मां ने विरोध किया था। इसी वजह से उसने उसकी मां की गला काटकर हत्या कर दी। पुलिस अधिकारी ने बताया कि घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

नई दिल्ली: मुरादनगर में सात साल की मासूम बच्ची की अपहरण कर हत्या, मस्जिद की छत पर मिला शव

मुरादनगर। मुरादनगर के मोहल्ला कोट में एक सात वर्षीय मासूम बच्ची का अपहरण का हत्या कर दी गई। हत्या करने के बाद मासूम बच्ची के शव को मस्जिद की छत पर फेंक दिया। मौके पर कई थानों की पुलिस मौजूद है और जांच कर रही है। मृतक बच्ची का नाम रिंमसा है और उसके पिता जाहिद एक स्कूल संचालक है। रिंमसा शनिवार की दोपहर से लापता थी। पास के ही रहने वाले एक सभासद के परिवार पर हत्या का आरोप लगाया जा रहा है।

शिमला : रोलर स्केटिंग चैंपियनशिप में शिरकत करते बच्चे।

तंत्री बोला, सरकार के साथ बातचीत का कोई मतलब नहीं, प्रदर्शन जारी

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी। सबरीमाला मंदिर के एक मुख्य पुरोहित ने रविवार को कहा कि सरकार के साथ बातचीत का कोई मतलब नहीं है। इसके साथ ही मुख्य पुरोहितों 'थाझामोन तंत्रियों' के साथ बातचीत की केरल सरकार की पहल को झटका लगा है। उधर, राज्य के कई हिस्सों में भगवान अयप्पा के श्रद्धालुओं का प्रदर्शन जारी है। पंडालम रॉयल्स ने कहा कि चर्चा का कोई मतलब नहीं है क्योंकि सीपीएम- नीत एलडीएफ सरकार ने शीर्ष अदालत के फैसले को लागू कराने के लिए पहले ही फैसला कर लिया है। पूर्ववर्ती राज परिवार भगवान अयप्पा के मंदिर से जुड़ा रहा है। इस बीच, पहाड़ी मंदिर की वर्षों पुरानी परंपरा, धार्मिक अनुष्ठान और आस्था को बरकरार रखने की मांग को लेकर राज्य के कई हिस्सों में भगवान अयप्पा के श्रद्धालुओं का प्रदर्शन जारी है। ऐसी खबरें हैं कि सरकार ने तंत्री परिवार और पंडालम रॉयल्स के सदस्यों को सोमवार को मुख्यमंत्री पिनराई विजयन से यहां बातचीत के लिए बुलाया है। तीन तंत्रियों में से एक कंडारारू मोहनारू और शशि कुमार वर्मा ने कहा कि फिलहाल सरकार के साथ बातचीत का कोई फायदा नहीं है क्योंकि वे शीर्ष अदालत के आदेश की समीक्षा के लिए न्यायालय जाने को तैयार नहीं हैं। मोहनारू ने चेंगान्नूर में कहा, 'हम समीक्षा याचिका दायर करेंगे। समीक्षा याचिका का नतीजा आने दें, हम पंडालम शाही परिवार का भी इस बारे में रुख जानने के बाद अधिकारियों के साथ बातचीत कर सकते हैं। तंत्री ने मंदिर परिसर 'सन्निधानम में महिला पुलिसकर्मियों की तैनाती के सरकार के कदम पर भी आपत्ति जताई और कहा कि यह पहाड़ी मंदिर की धार्मिक रीति-रिवाज और परंपराओं का उल्लंघन है।' इस तरह की भावना जाहिर करते हुए शशिकुमार वर्मा ने कहा कि इस मुद्दे पर शाही परिवार का रुख बिल्कुल स्पष्ट है। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय का फैसला गलत है। यह भगवान अयप्पा मंदिर के रीति-रिवाजों और परंपराओं का उल्लंघन है। सरकार फैसले की समीक्षा के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटाए बिना मंदिर में महिलाओं को प्रवेश की अनुमति दे रही है।

हत्या या हादसा : लोनी-भोपुरा रोड पर चलती कार में जिंदा जला 'आप' नेता

गाज़ियाबाद ट्रांस हिंडन। भोपुरा से टीला मोड़ जाने वाली सड़क पर गुरुवार देर रात 2.30 बजे चलती कार में जलकर दिल्ली के आम आदमी पार्टी कार्यकर्ता की मौत हो गई। सूचना पर मौके पर पहुंची दमकल की गाड़ी ने आग पर काबू पाया। मृतक के परिजनों ने साहिबाबाद थाने में कार में आग लगाकर हत्या करने की आशंका जताते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। मौके पर पहुंची फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं। पुलिस घटना के विभिन्न पहलुओं पर जांच कर रही है। दिल्ली के बुद्धनगर के इंद्रपुरी में नवीन कुमार दास अपने परिवार के साथ रहते थे।

45 वर्षीय नवीन कुमार दिल्ली में इवेंट मैनेजमेंट का काम करते थे। गुरुवार देर रात लोनी- भोपुरा रोड पर आईओसीएल गोदाम के पास उनकी कार जलती हुई अवस्था में मिली। मौके पर उनकी मौत हो गई।

घटना की जानकारी मिलने पर दमकल विभाग की टीम ने आग पर काबू पाया। थाना साहिबाबाद पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। इसके बाद पुलिस ने फॉरेंसिक टीम ने घटना स्थल से साक्ष्य जुटाए। वहीं मृतक के परिजनों ने हत्या की आशंका से थाना साहिबाबाद में मामला दर्ज कराया है। साहिबाबाद थाना प्रभारी दिनेश सिंह ने बताया पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस ने कार के नंबर के माध्यम से मृतक के परिजनों को घटना की सूचना दी।

छतरपुर से भोपुरा कैसे पहुंचा मृतक

जानकारी के अनुसार मृतक नवीन घर से गुरुवार दोपहर जमीन का सौदा करने के लिए छतरपुर गया था। नवीन ने अपनी बहन से बात कर बताया भी कि जमीन का सौदा हो गया है। उसके बाद से उसका नंबर बंद हो गया। सुबह पांच बजे साहिबाबाद पुलिस ने परिजनों को इस दुर्घटना की जानकारी दी। इसके बाद परिजन मौके पर पहुंचे। आग कैसे लगी यह स्पष्ट नहीं अग्निशमन अधिकारी एए हुसैन ने बताया कि घटना के बाद दमकल ने आग बुझाई। नाम नहीं प्रकाशित करने की शर्त पर कार कंपनी के अधिकारी ने बताया कि नवीन जिस कार में सवार थे, वह ब्रांड न्यू डीजल कार थी। सामान्यतया डीजल कार में आग नहीं लगती है। पुलिस जांच आग लगने की वजह की जांच कर रही है।

सेंट्रल लॉक लगा होने से बाहर नहीं निकल पाया नवीन

साहिबाबाद थाना प्रभारी दिनेश सिंह ने बताया कि कार में सेट्रल लॉक लगा था। संभव है आग लगने के बाद सेंट्रल लॉक न खुला हो, जिससे नवीन बाहर नहीं निकल सका। फॉरेंसिक टीम को तुरंत सूचना देकर घटना स्थल पर बुलाया गया था। इसके बाद टीम ने साक्ष्य जुटाए थे। परिजनों का आरोप कार में जलाकर की गई हत्या घटना की सूचना मिलने पर नवीन के परिजन मौके पर पहुंचे।

नवीन के गाजियाबाद आने की परिवार को जानकारी नहीं थी

नवीन की बड़ी बहन दीक्षा का कहना है कि उनके भाई नवीन कुमार गाजियाबाद क्यों आए थे, किसी को जानकारी नहीं है। उन्हें कोई गाजियाबाद लेकर आया और रात में सुनसान इलाके में सड़क के किनारे कार में आग लगाकर जिंदा जला दिया। उनका कहना है कि हो सकता है पहले हत्या की गई हो इसके बाद हादसा दिखाने के लिए कार में आग लगाई गई हो। अक्सर आग लगने के बाद कार खड़ी कर लोग बाहर निकल जाते हैं। नवीन कुमार के भाई मनोज कुमार ने साहिबाबाद थाने में मामले में हत्या की आशंका जताते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। उनका कहना है कि नवीन की किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी। वह सबकी मदद करते थे।

हत्या का मुकदमा दर्ज

इस मामले में हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस पीड़ित के नंबर को सर्विलांस की मदद से मामले की जांच में जुटी है। -डॉ. राकेश कुमार मिश्रा, सीओ

भू-माफिया मोती गोयल की हत्या के आरोपियों पर गुंडा कानून लगाया

नोएडा, एजेंसी। कुख्यात भू-माफिया मोती गोयल हत्याकांड में पकड़े गए तीन बदमाशों पर नोएडा की थाना सेक्टर-49 पुलिस ने गुंडा एक्ट के तहत कार्रवाई की हैं। वहीं थाना दादरी क्षेत्र में रहने वाले एक व्यक्ति की हत्या करने के मामले में दादरी पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ गुंडा एक्ट के तहत कार्रवाई की है। थाना सेक्टर-49 की प्रभारी निरीक्षक अनीता चौहान ने बताया कि 16 अप्रैल को गाजियाबाद के रहने वाले भू-माफिया मोती गोयल की नोएडा के बरौला गांव के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मृतक के बेटे ने इस संबंध में हत्या का मामला दर्ज कराया था।

हरेंद्र प्रधान ने दी थी लाखों की सुपारी

थाना प्रभारी ने बताया कि घटना की जांच कर रही पुलिस ने मोती गोयल की हत्या में शामिल कनारसी दनकौर के रहने वाले हरेंद्र प्रधान, सुनपुरा के रहने वाले अमित और राहुल को गिरफ्तार किया। उन्होंने बताया कि गोयल की हत्या जमीनी विवाद को लेकर हुई थी। हरेंद्र प्रधान ने इस मामले में लाखों की सुपारी देकर मोती गोयल की हत्या करवाई थी। उन्होंने बताया कि हरेंद्र प्रधान को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। थाना प्रभारी ने बताया कि पकड़े गए तीनों आरोपियों पर हत्या, हत्या के प्रयास, चोरी और लूट के कई मामले दर्ज हैं। जांच में यह पाया गया कि ये लोग एक संगठित गिरोह बनाकर अपराध को अंजाम देते और अवैध रूप से धन अर्जित करते थे। उन्होंने बताया कि हरेंद्र प्रधान अमित और राहुल के ऊपर गुंडा एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है।

गिरोह बनाकर वारदातों को दे रहे थे अंजाम

वहीं, थाना दादरी पुलिस ने 18 फरवरी, 2018 को कस्बा दादरी में रहने वाले इब्राहिम की हत्या मामले में मुस्तकीम, वसीम, सलमान, शाहरुख और रिजवान के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई की है। थाना दादरी के प्रभारी निरीक्षक राम सेन सिंह ने बताया कि जांच के दौरान पता चला कि ये लोग एक गिरोह बनाकर हत्या, लूट और हत्या के प्रयास की वारदातों को अंजाम दे रहे थे। उन्होंने बताया कि उनके ऊपर कई मामले चल रहे हैं।

निर्माणाधीन इमारत में लोहे की शटरिंग गिरी, चार की मौत

नोएडा। नोएडा के सेक्टर 94 में रविवार सुबह एक निर्माणाधीन भवन की लोहे की शटरिंग गिरने से उसके नीचे दबकर चार लोगों की मौत हो गई जबकि छह अन्य लोग घायल हो गए। घायलों में दो लोगों की हालत नाजुक बताई जा रही है। पुलिस उपाधीक्षक (नगर) अवनीश कुमार ने बताया कि सेक्टर 39 थाना क्षेत्र के सेक्टर 94 में बीपीटीपी बिल्डर एक हाईराइज इमारत बना रहा है। रविवार सुबह करीब 10 बजे इमारत के निर्माण में लगाई गई लोहे की शटरिंग अचानक गिर गई। घटना में वहां खड़े 10 मजदूर मलबे में दब गए। उन्होंने बताया कि मौके पर पहुंचे पुलिस दल ने शटरिंग के नीचे दबे हुए 10 मजदूरों अशोक, विजयपाल, महेश, अजय, सादाब, नौशाद, करण, नसरुल, राम जय कुमार और चक्रधारी को बाहर निकाला। इन सभी को नोएडा और दिल्ली के विभिन्न अस्पतालों में ले जाया गया। उन्होंने बताया कि उपचार के दौरान नौशाद, राम जय कुमार, करण और अशोक की मौत हो गई। अन्य घायलों में से दो की हालत गंभीर बनी हुई है।

पुलिस उपाधीक्षक का कहना है कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। पहली नजर में मामला बिल्डर की लापरवाही का लग रहा है। अधिकारी ने कहा, इस संबंध में मृतकों के परिजनों की ओर से तहरीर मिलने पर पुलिस आगे की कार्रवाई करेगी। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय आपदा मोचन बल और दमकल विभाग की टीमें मौके पर मौजूद हैं। घटना की वजह से सेक्टर 94 की निर्माणाधीन साइटों पर काम कर रहे मजदूरों में हड़कंप मच गया है। मौके पर हजारों की संख्या में मजदूर एकत्र हो गए थे जिन्हें पुलिस ने समझा बुझा कर वहां से हटाया।

10 में से 6 लापता बच्चे कभी नहीं मिलते, 5 साल में 26,761 हुए गायब

एजेंसी,नई दिल्ली। सड़कों पर रेड लाइट होने के दौरान सामान बेचने या भीख मांगने वाले बच्चे कहां से आते हैं? इन बच्चों की पहचान क्या है? राजधानी में हर साल हजारों बच्चे तस्करी का शिकार होते हैं।

एक हालिया रिपोर्ट के मुताबिक राजधानी में लापता होने वाले 10 में से छह बच्चों का कभी पता ही नहीं चलता।

अलायंस फॉर पीपुल्स राइट्स (एपीआर) और गैर सरकारी संगठन चाइल्ड राइट्स एंड यू (क्राई) द्वारा किये गए एक हालिया अध्ययन ''दिल्ली में लापता बच्चे 2018 के मुताबिक, पिछले पांच साल में दिल्ली में 26,761 बच्चे लापता हो गए। इनमें से 9,727 बच्चों का ही पता चल सका।

राष्ट्रीय राजधानी में लापता होने वाले हर 10 बच्चों में छह का पता नहीं चल पाता है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों और पुलिस से सूचना के अधिकार के तहत मिले जवाब के आधार पर रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली में 63 प्रतिशत लापता बच्चों का पता नहीं चल पता है। यह आंकड़ा बाकी देश के 30 प्रतिशत आंकड़े से दोगुना है।

दिल्ली के मयूर विहार के एक ट्रैफिक सिग्नल पर रोजी-रोटी के लिए फूल बेचने वाले मनोज ने कहा, ''गिरोह के लोग कुछ दूरी से इन सिग्नलों पर ऐसे बच्चों पर नजर रखते हैं और जब पुलिस उन्हें बचाने के लिए आती है तो दावा करते हैं कि वे सभी उनके बच्चे हैं।

मनोज ने कहा कि इनमें से कई बच्चों को दूसरे राज्यों से तस्करी कर लाया जाता है और ट्रैफिक सिग्नल पर जो महिलाएं होती हैं, वो ऐसे जाहिर करती हैं कि वो इन बच्चों के अभिभावक हैं।

क्राई की क्षेत्रीय निदेशक (उत्तर) सोहा मोइत्रा ने कहा कि बच्चों का पुनर्वास करना एक बड़ी चुनौती है।

उन्होंने कहा, '' अगर बहुत छोटी उम्र में बच्चों की तस्करी हुई हो तो ऐसे बच्चों का पता लगाने में ज्यादा समय लगता है और इस वजह से उन्हें अपने घर के बारे में भी याद नहीं होता।

चेहरा पहचानने वाली अद्यतन तकनीक पर काम चल रहा है और पुलिस आश्वस्त है कि बेहद छोटी उम्र में तस्करी के शिकार होने वाले बच्चों के पुनर्वास में इससे मदद मिलेगी।

एक अधिकारी ने कहा कि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने पाया है कि दिल्ली में 36 ट्रैफिक सिग्नलों पर 600 से ज्यादा बच्चे भीख मांगते हैं या फिर किसी सामान वगैरह की बिक्री करते हैं। लेकिन यह एक महज नमूना भर है, वास्तविक आंकड़ा बहुत अधिक हो सकता है।

अधिकारी ने कहा कि कई बच्चों को उनके अभिभावक भीख मंगवाते हैं या कलम, फूल या गुब्बारे आदि बेचने के लिए कहते हैं जबकि कई बच्चों को तस्करी कर यहां लाया जाता है। एनसीपीसीआर के सदस्य यशवंत जैन ने कहा कि बाल अधिकार आयोग ने ट्रैफिक सिग्नलों पर दिखने वाले बच्चों की पुनर्वास योजना के लिए विभिन्न अधिकारियों के साथ ही मुख्यमंत्री को पत्र लिखा है लेकिन इसका कोई नतीजा नहीं निकला।

संपादकीय

राजनीति में पेट्रोल

केंद्र सरकार ने यों तो पेट्रोल-डीजल को सस्ता करने की राह खोली है पर यह कोशिश राजनीतिक बहसबाजी का केंद्र बन गई है। केंद्र सरकार ने अपनी तरफ से पेट्रोल-डीजल के उत्पाद शुल्क में 1.50 रु पये प्रति लीटर की कमी की है। इसके अलावा एक रु पया प्रति लीटर का घाटा सरकारी तेल कंपनियां उठाएंगी। यानी केंद्र सरकार की तरफ से करीब ढाई रु पये की कटौती एक लीटर पर हुई है। भाजपा वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकारें जिन राज्यों में हैं, वहां की अधिकांश सरकारों ने पेट्रोल-डीजल पर ढाई रु पये प्रति लीटर का राज्यकर भी कम कर दिया है। तो तमाम भाजपा शासित राज्यों में

पांच रु पये प्रति लीटर सस्ताई आ गई है पेट्रोल डीजल के भावों में। पर मामला सिर्फ अर्थशास्त्र का नहीं है। तेल के भावों में राजनीति का आना जरूरी है। अब गैर भाजपा सरकारों के सामने चुनौती है कि वो अपने राज्यकर में कटौती करके पेट्रोल-डीजल को और सस्ता बनाएं। ढाई रु पये लीटर की सस्ताई केंद्र सरकार ने की, अब राज्य सरकारें भी अपने संसाधनों में कटौती करके राहत दें। मोटे तौर पर स्थिति यह उभरी है कि भाजपा शासित राज्यों में सस्ताई पांच रु पये प्रति लीटर की है और गैर भाजपा शासित राज्यों में सस्ताई ढाई रुपये लीटर की है। इस मसले पर राजनीति शुरू हो गई है। गैर भाजपा सरकारें अपने संसाधनों में कटौती करके डीजल-पेट्रोल को सस्ता करने के काम को आसानी से स्वीकार नहीं करेंगी और इस मसले को राजनीति का विषय बनाया जाएगा कि केंद्र ने सस्ताई कर दी, राज्य सरकारें अपनी तरफ से कोई राहत नहीं दे रही हैं। जो कच्चा तेल कुछ महीने पहले 60 डॉलर का एक बैरल आ रहा था, वह अब 86 डालर के स्तर पर जा रहा है। पिछले चार सालों का यह अधिकतम स्तर है। ईरान पर अमेरिकन अंकुश, ग्लोबल राजनीतिक स्थितियां इनके लिए जिम्मेदार हैं। कुल मिलाकर उन हालात पर भारत का दखल कुछ खास नहीं है। इसलिए महंगे तेल से निपटने के लिए रणनीतियों की लगातार जरूरत रहेगी। बजाय इसके कि भाजपा और गैर भाजपा दल इस मसले पर सिर-फुटौव्वल करें, सारे महत्वपूर्ण राजनीतिक दल साझा विमर्श करें कि इस किस्म की ग्लोबल परिस्थिति से कैसे निपटाया जाए? पेट्रोल-डीजल के भाव सिर्फ आर्थिक विषय नहीं हैं, इनका भारतीय परिप्रेक्ष्य में गहरा राजनीतिक महत्व भी है।

उम्मीदों का पृथ्वी

गुरुवार को राजकोट के क्रिकेट मैदान पर मुंबई के युवा बल्लेबाज पृथ्वी शॉ के बल्ले ने एक नया इतिहास रचा। राजकोट में 134 रनों की पारी खेलकर पृथ्वी शॉ भारत के पहले ऐसे बल्लेबाज बने, जिन्होंने रणजी ट्रॉफी, दिलीप ट्रॉफी और अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट मैच के पहले ही मैच में शतक लगाया। तेंदुलकर की तरह 14 वर्ष की उम्र के खिलाड़ी ने अपने स्कूल क्रिकेट में 546 रन की विशालकाय पारी खेली थी। फिर तमिलनाडु के खिलाफ खेलते हुए रणजी ट्रॉफी में 17 वर्ष की उम्र में 120 रन की पारी खेली। संयोगवश यह पारी भी राजकोट के मैदान पर ही खेली गई। यही नहीं, दिलीप ट्रॉफी में 154 रन की पारी खेलते हुए 17 वर्ष और 320 दिन के पृथ्वी शॉ तेंदुलकर के बाद सबसे कम उम्र के शतक लगाने वाले खिलाड़ी भी बने। दरअसल, राजकोट में चमत्कार की जमीन 2018 के अंडर-19 वर्ल्ड कप में ही तैयार हो गई थी, जिसमें विजेता भारतीय टीम के कप्तान भी पृथ्वी शॉ ही थे। उनके नेतृत्व में भारतीय टीम के कुछ और चमकदार सितारे उन्मुक्त चांद, शुभम गिल, अभिषेक यादव सामने आए।

बचपन में क्रिकेट सीखने के लिए पृथ्वी ने बहुत तकलीफें उठाईं। जब पृथ्वी 3 वर्ष का था तभी उसके पिता उसे गया से लेकर मुंबई चले गए जहां उसने 4 वर्ष की उम्र में ही अपनी मां को खो दिया। अपने पिता की प्रेरणा और सहयोग से यह छोटा बालक विरार से बांद्रा तक रोज 4 घंटे का ट्रेन का सफर अपनी भारी-भरकम क्रिकेट किट के साथ करता था। उसकी यह मेहनत और उसके प्रयास अंत में फलीभूत हुए जब 11 वर्ष की उम्र में अपने स्कूल क्रिकेट में उसने 546 रनों की विशालकाय पारी खेली और क्रिकेट चयनकर्ताओं की निगाह में चढ़ गया। फिर उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। किसी भी महान व्यक्ति को सफल होने के लिए विभिन्न संघर्षों से दो-चार होना पड़ता है। आखिरकार पृथ्वी ने अपने पिता और अपने संघर्षों को सफलता के रास्ते से मंजिल की तरफ मोड़ दिया और भारत को एक नई प्रतिभाशाली और युवा क्रिकेट टीम का भविष्य नजर आने लगा है। भारत के महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर के इस कथन के गहरे निहितार्थ हैं कि पृथ्वी शॉ की सबसे बड़ी काबिलियत हर परिस्थिति में अपने आप को ढाल लेना है।

ओशो

जातिवाद

दो-तीन बातें करना चाहूंगा। एक तो जातीय दंगे को साधारण मानना शुरू करना चाहिए। उसे जातीय दंगा मानना नहीं चाहिए, साधारण दंगा मानना चाहिए। और जो साधारण दंगे के साथ व्यवहार करते हैं वही व्यवहार उस दंगे के साथ भी करना चाहिए, क्योंकि जातीय दंगा मानने से कठिनाइयां शुरू हो जाती हैं, इसलिए जातीय दंगा मानने की जरूरत नहीं है। जब एक लड़का एक लड़की को भगाकर ले जाता है। वह मुसलमान हो कि हिन्दू, कि लड़की हिन्दू है कि मुसलमान है-इस लड़के और लड़की के साथ वही व्यवहार किया जाना चाहिए, जो कोई लड़का किसी लड़की को भगा कर ले जाए, और हो। इसको जातीय मानने का कोई कारण नहीं है। और हम, जो इस मुल्क में जातीय दंगों को खत्म करना चाहते हैं, इतनी ज्यादा जातीयता की बात करते हैं कि हम उसे रिक्गनिशन देना शुरू कर देते हैं। इसलिए पहली बात तो यह है कि जातीयता को राजनीति के द्वारा किसी तरह का रिक्गनिशन नहीं होना चाहिए। राज्य की नजरों में हिन्दू या मुसलमान का कोई फर्क नहीं होना चाहिए। लेकिन हमारा राज्य खुद गलत बातें करता है। हिन्दू कोड बिल बनाया हुआ है, जो कि सिर्फ हिन्दुओं पर लागू होगा, मुसलमान पर लागू नहीं होगा! यह क्या बदतमीजी की बातें हैं? कोई भी कोड हो तो पूरे नागरिकों पर लागू होना चाहिए। अगर ठीक है तो सब पर लागू होना चाहिए, ठीक नहीं है तो किसी पर लागू नहीं होना चाहिए। लेकिन जब आपका पूरा राज्य भी हिन्दुओं को अलग मानकर चलता है, मुसलमान को अलग मानकर चलता है, तो किस तल पर यह बात खत्म होगी? तो पहले तो हिन्दुस्तान की सरकार को साफ तौर से तय कर लेना चाहिए कि हमारे लिए नागरिक के अतिरिक्त किसी का अस्तित्व नहीं है। और अगर ऐसा मुसलमान गुंडागिरी करता है तो एक नागरिक गुंडागिरी कर रहा है। जो उसके साथ व्यवहार होना चाहिए, वह होगा। यह मुसलमान का सवाल नहीं है। राज्य की नजरों से हिन्दू और मुसलमान का फासला खत्म होना चाहिए, पहली बात। दूसरी बात-कि हिन्दू मुस्लिम के बीच शांति हो, हिन्दू-मुस्लिम का भाई-चारा तय हो, ऐसी सब कोशिश बंद करनी चाहिए। यह कोशिश खतरनाक है। इसी कोशिश ने हिन्दुस्तान पाकिस्तान को बंटवाया। क्योंकि जितना हम जोर देते हैं कि हिन्दू मुस्लिम एक हों, उतना ही हर बार दिया गया जोर बताता है कि वे एक नहीं हैं।

ये तो यकीनन बड़े खतरे के संकेत

हरिमोहन मिश्र

की कुछ घटनाएं और खासकर उनका रुझान एक खतरनाक दिशा की ओर संकेत कर रहा है। अगर यह रुझान बढ़ा तो इसके नतीजे हमारे राष्ट्र के पूरे ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर सकते हैं। उत्तर प्रदेश पुलिस की समूची निचली पांत ने उन सिपाहियों के समर्थन में काली पट्टी बांधकर विरोध जताया, जिन्हें लखनऊ में आधी रात एक निजी कंपनी में काम करने वाले शख्स को कथित तौर पर गाड़ी न रोकने पर गोली मार देने के अपराध में पकड़ा गया है। दूसरे, गुजरात में एक नाबालिग बच्ची से बलात्कार के आरोप में बिहार के एक शख्स के पकड़े जाने के बाद वहां पांच-छह जिलों में बिहार-उप्र के लोगों के साथ मार-पीट शुरू हो गई। इन दोनों ही घटनाओं में सरकार फौरन हरकत में आई, जिनकी सियासी वजहें भी हो सकती हैं। लेकिन महत्वपूर्ण इस प्रवृत्ति पर गौर करना है, जो न्याय-अन्याय पर विचार किए बगैर अपने ऊपर कोई आंच बर्दाश्त नहीं करती या किसी एक के अपराध के लिए पूरी जमात को दंडित करने लगती है। अगर यह प्रवृत्ति तेज हुई तो समाज छोटे-छोटे दायरों में बंटकर एक नई टकराहट की ओर बढ़ सकता है। लेकिन असली सवाल यह है कि क्या ये प्रवृत्तियां पैदा करने में मौजूदा राजनीति ही मददगार बन रही है?याददाश्त पर हल्का-सा भी जोर डालेंगे तो हाल के दौर की राजनीति में इसकी झलक मिल जाएगी। लेकिन सबसे खतरनाक शायद पुलिस वाला मामला ही है। आखिर पुलिसवालों को क्यों लगता है कि उसके साथी ने गोली मारकर कोई गुनाह नहीं किया है। संभव है, उन्हें जब एनकाउंटर करने की छूट मिल गई हो तो उन्हें यह अपना विशेषाधिकार लगने लगा हो। अगर बाकी मामलों में गोली चलाना अपराध नहीं है तो इस मामले में भी उन्हें छूट मिलनी चाहिए! यह खतरनाक दलील ही शायद उन्हें गोलबंद होने में मदद कर रही हो। हालांकि उप्र के डीजीपी ओपी सिंह ने आश्वस्त किया है कि पुलिस में अनुशासन कायम है और ऐसी मुहिम के लिए कुछेक पुलिसवालों पर कार्रवाई भी हुई है। लेकिन अनुशासन का हाल तो यह है कि इसी दौरान बुलंदशहर में 13 पुलिसवालों पर कथित तौर डकैती और लूट के मुकदमे दर्ज किए गए हैं। इस मामले में एक धोबी मोहम्मद मुस्तकीम ने उनसे अपने बकाए का तकादा किया तो उन्होंने उसके घर पर धावा बोलकर मोटर साइकिल, 84000 रु वगैरह छीन लिए। अगर गौर करेंगे तो हापुड़, मेरठ वगैरह में पुलिस ज्यादती की घटनाएं भी फौरन याद आ जाएंगी। एक घटना में तो पुलिस की मौजूदगी में तथाकथित हिन्दुत्ववादी युवकों ने एक पैरामेडिकल मुस्लिम छात्र की पिटाई की और पुलिसवाले उसकी दोस्त हिन्दू छात्रा के लिए बेहद अपमानजनक टिप्पणियां कर रहे थे।लेकिन सवाल यह है कि ऐसी प्रवृत्तियां कैसे बढ़ रही हैं? क्या पुलिस के मन बढ़ने की वजह मौजूदा सियासत और राज्य सरकार की कथित एनकाउंटर के प्रश्रय में नहीं दिखती है? बेशक, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यह साफ कर चुके हैं कि राज्य में ऐसी कोई नीति नहीं है, लेकिन वे कई बार अपराध पर नियंतण्रके तहत एनकाउंटरों के पक्ष में भी बोल चुके हैं। जो पुलिस एनकाउंटर को अपना ''विशेषाधिकार' मानने लगेगी, उससे उच्छृंखलता की भी भला कैसे उम्मीद नहीं की जा सकती? ऐसे ''विशेषाधिकार' किसी को भी दुरुपयोग और मनमानी की ओर प्ररित कर सकते हैं। ऐसे नजारे मुंबई और दिल्ली जैसे महानगरों में देखे जा चुके हैं। दरअसल, एनकाउंटरों की छूट सबसे पहले महाराष्ट्र में 1995 में मनोहर जोशी सरकार ने दी थी। तब कई एनकाउंटर स्पेशलिस्टों की

गाथाएं सेलेब्रेटी की तरह पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी थीं और बाद में वे सभी अपराधों में गहरे धंसे पाए गए। ये बातें नई नहीं हैं। पुलिस सुधार पर कई समितियों की रपट में पुलिस की मनमानी को रोकने के कई उपाय सुझाए गए हैं। लेकिन 1971 से लेकर 2006 के बीच बनीं गोरे समिति, रिबेरो समिति, पद्मनाभैया समिति, सोली सोराबजी समिति की रिपोर्ट सरकारी दफ्तरों की धूल फांक रही हैं। असल में इन सिफारिशों को लागू करने से शायद हुक्मरानों के लिए पुलिस या सरकारी तंत्र को अपने औजार की तरह इस्तेमाल करना आसान नहीं रह जाएगा। लेकिन अपनी मनमानियों के पक्ष में गोलबंद होने की यह कमोबेश नई प्रवृत्ति बेहद खतरनाक हो सकती है। हाल में यह देख कर सभी दंग रह गए कि सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम (आफ्सां) के पक्ष में अदालत में अर्जी लगाने वाले फौजियों की बाढ़ आ गई। कश्मीर और मणिपुर, मेघालय जैसे पूर्वोत्तर के राज्यों में आफ्सां कानून पर विवाद काफी पुराना है। इसके तहत फौज पर अत्याचार और मनमानियां करने के आरोप लगातार लगते रहे हैं। कई बार केंद्र सरकारों ने इसे हटाने का वादा भी किया, लेकिन सेना के विरोध के कारण शायद नहीं हट पाया। फिर भी सैनिकों के स्तर से इस विशेषाधिकार के बचाव की औपचारिक बात कभी नहीं उठी। आज जब ऐसे विशेषाधिकारों की आलोचनाओं को ''देश विरोधी' बताया जाने लगा है तो जाहिर है, इसके पक्ष में खुलकर बोलने की प्रवृत्तियां भी पैदा हो रही हैं। तो, जैसी राजनीति चलेगी, उसकी विद्रूपताएं भी उसी तरह नमूदार होंगी। गुजरात में बिहार-उत्तर प्रदेश के लोगों के खिलाफ माहौल में भी क्यों नहीं तथाकथित गोरक्षकों द्वारा पीटकर सरेआम लोगों को मारने की बढ़ती प्रवृत्ति का प्रतिफल देखा जाना चाहिए? यही मामला आप कई तरह की नई गोलबंदियों में देख सकते हैं। हाल में अनुसूचित जाति-जनजाति उत्पीड़न कानून में ढील देने के सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश के खिलाफ सरकार संशोधन ले आई तो अपने को सवर्ण कहने वाले लोगों ने उसके विरोध में शायद पहली बार भारत बंद का अह्वान किया, जिसका मध्य प्रदेश में थोड़ा ज्यादा असर दिखा। सरकार ने ज्यादा माथापच्ची किए बगैर सिर्फ राज्यों को अपने अनुसूचित जाति उत्पीड़न कानून में ढील दे देने की सलाह दे दी। उसके बाद उप्र वगैरह ने अपने कानून में फेरबदल कर भी लिया है। सामाजिक न्याय और हर तरह के अन्याय को मिटाने की सियासत जब सोशल इंजीनियरिंग, ध्रुवीकरण और खास तरह के पहचान के मुद्दों पर गोलबंदी में बदल जाएगी तो दूसरों की कीमत पर सिर्फ और सिर्फ अपने हक की बातें भी कहने का साहस या दुस्साहस पैदा हो सकता है। यह पहचान या आइडेंटिटी की राजनीति इन दिनों वैसे तो पूरी दुनिया में देखी जा रही है। हाल ही में प्रसिद्ध राजनीतिशास्त्री फ्रांसिस फुकुयामा की नई किताब ''आइडेंटिटी- द डिमांड फॉर डिग्निटी एंड द पॉलिटिक्स ऑफ रिसेंटमेंट' आई है। उनकी दलील है कि 20वीं सदी में राजनीति-आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित थी यानी मजदूर यूनियनों और वंचित वर्ग को वाजिब हक दिलाने, समाज कल्याण कार्यक्रमों और संसाधनों में सबको हिस्सेदारी देने की नीतियों पर जोर था। लेकिन आज की राजनीति पहचान के सवालों पर केंद्रित है, राजनैतिक नेता यह कहकर लोगों की गोलबंदी कर रहे हैं कि उनके मान-सम्मान को ठेस पहुंची है और उसे बहाल करना है।फुकुयामा पुराने यूनानी दार्शनिकों के हवाले से मनुष्य में दो प्रवृत्तियों का जिक्र करते हैं। एक है ''मेगलोथिमिया' यानी दूसरों से बड़े कहलाने की ललक। और दूसरी है ''आइसोथिमिया' यानी अपनी अहमियत का एहसास। फुकुयामा का तर्क है,''लोकतंत्र के पहले का समाज इस मान्यता पर आश्रित था कि कुलीन, अभिजन, राजसी कुल स्वाभाविक तौर पर ऊंचा है। लेकिन ''मेगलोथिमिया' के तहत हर ऊंचे आदमी के लिए ढेरों लोगों को नीचा होना पड़ता है। इससे तेज नाराजगी उठती है। यह भाव पैदा होता है कि उन्हें भी उतना ही अच्छा माना जाए, मैं इसे ''आइसोथिमिया' (अपनी अहमियत का एहसास) कहता हूं। आधुनिक लोकतंत्र ''मेगलोथिमिया' पर ''आइसोथिमिया' की विजय की दास्तां हैं।' लेकिन वे आगे कहते हैं कि ''आइसोथिमिया' अब अधिकारों की बराबरी के संघर्ष बदले अपने वजूद को कायम रखने की जिद में बदलती जा रही है।' यही वह पहलू है जिसे नेताओं को समझना चाहिए और साझा हित, साझा अधिकारों की राजनीति पर जोर देना चाहिए वरना देश भयानक टकरावों के दौर में फंस सकता है।

> सामाजिक न्याय और हर तरह के अन्याय को मिटाने की सियासत जब सोशल इंजीनियरिंग, ध्रुवीकरण और खास तरह की पहचान के मुद्दों पर गोलबंदी में बदल जाएगी तो दूसरों की कीमत पर सिर्फ अपने हक की बातें भी कहने का साहस या दुस्साहस पैदा हो सकता है। 20वीं सदी में राजनीति-आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित थी। आज की राजनीति पहचान के सवालों पर केंद्रित है, राजनैतिक नेता यह कहकर लोगों की गोलबंदी कर रहे हैं कि उनके मान-सम्मान को ठेस पहुंची है और उसे बहाल करना है

प्रसंगवश

लोकोन्मुखी कार्यक्रम चाहिए

गिरीश्वर मिश्र

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एक स्वनिर्मित व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने अनुभवों से स्वयं को गढ़ा था, अपने लिए नियम खोजे थे और खुद उन पर चलने का अभ्यास किया था। इसलिए यदि वह अपनी जीवन कथा को ''सत्य के साथ प्रयोग' नाम देते हैं, तो यह यथातय वर्णन ही कहा जाएगा। उन्होंने इंग्लैंड में अध्ययन, दक्षिण अफ्रीका में अपने व्यावसायिक तथा सामाजिक जीवन और आगे चल कर भारत में अपने खट्टे-मीठे अनुभवों और अध्ययनों के आधार पर कुछ सूत्र या सिद्धांत खोजे जिनको जीवन में व्यवहार के लिए मार्गनिर्देशक जैसा बनाए रखा।आश्चयजनक रूप से सार्वभौमिक लगने वाले ये विचार भारतीय दर्शन मुख्यत- उपनिषदों और भगवद्गीता के अनुकूल थे। उन्होंने जिन सूत्रों की तलाश की थी, उनमें सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन, शरीर-श्रम और सद्भाव खास थे। इन सूत्रों को अनुभव की आंच में परखते-पकाते भी रहे। समय बीतने के साथ और कार्य क्षेत्र में विस्तार के साथ इनमें उनका विास दृढ़ से दृढ़तर होता गया। वे स्वयं इन पर टिके रहे और सार्वजनिक जीवन में इनको अपनाने का उनका आग्रह बढ़ता ही गया। गांधी जी द्वारा साबरमती और सेवाग्राम (वर्धा) आदि विभिन्न स्थलों पर स्थापित किए गए आश्रमों में भी इन सिद्धांतों के आधार पर दिनर्चया को संचालित करने के लिए नियमादि लागू किए गए। ये ही उनके निकट आने वाले और साथ काम करने के इच्छुक व्यक्तियों पर भी लागू होते थे। शिक्षा, समाजर्चया और राजनीति, प्रत्येक क्षेत्र में निजी और सामुदायिक जीवन, दोनों के लिए इन्हीं कसौटियों के अधीन आचरण करने पर उनका जोर रहा। ''निज' और ''पर' के भेद से ऊपर उठ कर मात्र मनुष्यता को स्पर्श करने के कारण इन सूत्रों की परिधि और प्रक्रिया सरल परंतु व्यापक थी। फलत- ये स्थानीय और नियंतण्र के बीच अंतर किए बिना विलक्षण रूप से सब पर एक जैसे ही लागू होते हैं। लोक के साथ एकाकार हो कर ही वे यह कह सके कि उनका जीवन एक खुली किताब है, जिसे कोई भी बांच सकता है।थोड़ी गहराई से विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य जीवन के अस्तित्व के पांच कोष की औपनिषदिक अवधारणा, ईशावास्योपनिषद का ''तेन त्यक्तेन भुंजीथा-' और गीता का कर्म योग ही गांधी जी के व्यावहारिक अध्यात्म के मूल आधार का निर्माण करते हैं। उनका अहिंसा का विचार सिर्फ हिंसा का त्याग नहीं है। निष्क्रिय तटस्थता और विरक्ति की जगह वह सक्रिय प्रेम और स्नेह के आधार पर पारस्परिक व्यवहार की भाव-भूमि का निर्माण करता है। इसमें अपने अतिरिक्त व्यक्ति, समुदाय, वृक्ष, वनस्पति समेत जो कुछ भी अस्तित्व में है, उस सबके साथ स्नेह और हित की कामना भी शामिल है। ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि जीव जगत का सह अस्तित्व और जैव विविधता का स्वीकार जीवन की पहली शर्त है।हिंसा की शैली लोकतंत्र के लिए एक जरूरी जोखिम होती जा रही है, जिसको झेलना अब व्यवस्था का अंग (या अकाट्य नियति!) बनता रहा है। सामाजिक-आर्थिक विषमता, बढ़तीं महत्वाकांक्षाएं और चारित्रिक क्षरण सामाजिक जीवन को अस्त-व्यस्त कर रहे हैं। आज की राजनीति ''आचार को परम धर्म' (कर्त्तव्य) के भारतीय विचार को भूलती जा रही है। भौतिक मूल्यों की प्रधानता वाली आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता को लेकर जो भय और संदेह महात्मा गांधी ने अपने ''हिन्द स्वराज' में एक सदी पहले व्यक्त किया था, वह काफी हद तक आज सही दिखता है। अब जब पूज्य बापू की डेढ़ सौंवी जयंती मनाते हुए हम कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे हैं, तो राजनीति को लोक में वापस लाने कि जरूरत बड़ी शिद्दत से महसूस हो रही है। राजनैतिक दलों को इस अवसर पर राजनैतिक जीवन में खोई हुई शुचिता लाने की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए। यह निरा संयोग नहीं है कि सरकारी प्रशासन (राज्यपालन!) की व्यवस्था, जो अनिवार्यत- लोकपालन के लिए प्रतिश्रुत है, अब अपर्याप्त (या अविश्वसनीय!) साबित हो रही है। हमें अब लोकपालन की अतिरिक्त व्यवस्था भी करनी चाहिए। बड़ी जद्दोजहद के बाद अब ''लोकपाल' और जन लोकपाल की ढूंढ़ाई शुरू हो चुकी है। आशा है कि (अगर मिल गया तो!) वह लोकतंत्र की व्यवस्था के पंगु और बहरे होने की स्थिति पर कुछ अंकुश लग सकेगा। वास्तव में लोकानुशासन को महत्व दिए बिना चौकसी दर चौकसी की कोई भी व्यवस्था नाकाफी ही रहेगी। लोक को केंद्र में रख कर ही जनतांत्रिक राजनीति संभव है।

बीच समय में

विधायिका-न्यायपालिका में फंसे मौलिक अधिकार

ज्योतिका कालरा

विधायिका-न्यायपालिका में फंसे मौलिक अधिकार बीते महीने सुप्रीम कोर्ट द्वारा भारतीय दंड संहिता की धारा 377-''अप्राकृतिक अपराध'-पर दिए गए निर्णायक निर्णय से भारत विश्व का 122वां देश बन गया है, जहां अप्राकृतिक संबंध अब अपराध नहीं है। लगभग 150 वर्ष पूर्व जब अंग्रेजी राज के दौरान मैकाले द्वारा 1860 में भारतीय दंड संहिता बनाई गई तब ''प्रकृति के नियम के विरुद्ध इन्द्रिय संभोग' को अपराध की श्रेणी में रखा गया। बड़ा सवाल उठता है कि स्वेच्छा से अलग प्रकार का यौन संबंध अपराध क्यों माना गया होगा? समाज के किस वर्ग को अलग प्रकार के यौन संबंधों से खतरे की संभावना होगी? क्या इस प्रकार के कानून से अलग प्रकार के यौन संबंधों को रोका जा सका? अपराध तो दूर, भारतीय चिंतन तो काम को लेकर व्यापक दृष्टि रखता है। यहां ''काम' व्यापक अर्थ में न केवल पुरु षार्थ माना गया, बल्कि भारत के कई मंदिरों के भित्ति चित्र संभोग के दृश्य से सजाए भी गए। मोटे तौर पर मानें तो ''प्रकृति के नियम के विरुद्ध इन्द्रिय संभोग' में भावना रही होगी कि अगर संभोग से बच्चा पैदा होने की संभावना नहीं है, तो वह प्रति के नियम के विरुद्ध है। धारा 377 एलजीबीटी समुदाय को ही संबोधित नहीं करती अपितु पुरु ष और स्त्री के बीच के संबंधों को भी अपराध की श्रेणी में ले जा सकती है। यह कानून ब्रिटिश इंडिया में बगरी एक्ट, 1533 से आया। बगरी एक्ट में भगवान की इच्छा के विरुद्ध अप्राकृतिक संभोग को अपराध माना गया। बगरी एक्ट, 1533 को ''ऑफेंसेस अगेंस्ट द पर्सन एक्ट, 1828' से बदल दिया गया। फिर 1828 के ''ऑफेंसेस अगेंस्ट द पर्सन एक्ट' को ''ऑफेंसेस अगेंस्ट द पर्सन एक्ट, 1861' से बदल दिया गया। अतिश्योक्ति देखिए कि अंग्रेजों द्वारा अप्राकृतिक यौन संबंध से संबंधित कानून आज भी हमारी दंड संहिता में है, जबकि लगभग 51 वर्ष पूर्व अंग्रेजों ने सेक्सुअल ऑफेंसेस एक्ट, 1967 द्वारा इस कृत्य को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया।भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा की अगुवाई में सुप्रीम कोर्ट ने ''नवतेज सिंह जौहर बनाम यूनियन ऑफ इंडिया' के फैसले में धारा 377 को संविधान की भावनाओं के विरुद्ध पाया। इसी फैसले में उच्चतम न्यायालय द्वारा पहले दिए गए फैसले-सुरेश कौशल बनाम नाज फाउंडेशन जिसके द्वारा धारा 377 को संवैधानिक घोषित किया गया था-को खारिज कर दिया। न्यायालय ने यह भी कहा कि 'यौन अभिविन्यास' (सेक्सुअल ओरिएंटेशन) एक प्राकृतिक क्रिया है, जो किसी व्यक्ति के सचेत प्रयास कि परिधि से परे है। ''पुट्टा स्वामी' के फैसले-जिसमें ''निजता के अधिकार' को मूल अधिकार का दरजा दिया गया-को आधार बनाते हुए न्यायालय ने तय किया कि हर व्यक्ति का अधिकार है कि वह जिस तरह चाहे अपने आप को प्रस्तुत कर सकता है। न्यायमूर्ति चन्द्रचूड़ ने इसी फैसले में यह बात भी कही कि विधायिका ने अपना काम न्यायपालिका पर डाल दिया और विधायिका अपने काम को करने से बची रही। यह वास्तविकता है कि कानून बनाना/बदलना विधायिका का अधिकार है। न्यायपालिका का भी उत्तरदायित्व है कि किसी कानून से मौलिक अधिकारों का हनन हो तो उस कानून को निरस्त घोषित करे। इस तरह, यदि विधायिका अनुच्छेद 377 को दंड संहिता से हटाने में असफल रही है, तो न्यायपालिका भी कुछ कम नहीं रही। उसने भी अपने लिए विहित दायित्व का निर्वाह करने में 17 से ज्यादा वर्षो का समय लगा दिया। धारा 377 को चुनौती देने वाली याचिका, दिल्ली उच्च न्यायालय में 2001 में नाज फाउंडेशन द्वारा डाली गई। 2003 में हाई कोर्ट ने इसे खारिज कर दिया। याचिकाकर्त्ता निर्णय के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट गए तथा सुप्रीम कोर्ट ने मामले को पुनर्विचार हेतु हाईकोर्ट को वापस भेजा। 2009 में न्यायमूर्ति अजीत प्रकाश शाह तथा न्यायमूर्ति एल. मुरलीधरन ने ऐतिहासिक निर्णय दिया। इसमें व्यवस्था दी कि धारा 377, जो वयस्कों के यौन संबंधों को आपराधिक कृत्य ठहराता है, संविधान द्वारा दिए गए मौलिक अधिकारों-अनुच्छेद 14 (बराबरी का अधिकार), 15 (भेदभाव न होने का अधिकार) तथा 21 (जीवन जीने का अधिकार) का स्पष्टत- उल्लंघन करता है। इस निर्णय के विरुद्ध कई व्यक्तियों ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की, जिनमें से एक सुरेश कौशल भी थे। ''सुरेश कौशल' के मामले में दिए निर्णय में सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिल्ली हाईकोर्ट के निर्णय को यह कहते हुए पलट दिया गया कि धारा 377 किसी भी तरह असंवैधानिक नहीं है। आज जिस निर्णय का इतने बड़े स्तर पर स्वागत हुआ वहीं 2014 में जब शशि थरूर, तत्कालीन लोक सभा सदस्य, ने इस विषय से संबंधित ''प्राइवेट मैम्बर बिल' सदन में प्रस्तुत करना चाहा तो इसे सदन के पटल पर प्रस्तुत होने से पहले ही खारिज कर दिया गया।असली मुद्दे और गंभीर विचार की अपेक्षा करने वाली बात यह है कि क्या 150 साल बाद भी हम अंग्रेज साम्राज्यवादी शासकों द्वारा बनाए गए कानून को ही आज के लोकतंत्र की बदली परिस्थिति में अक्षरश- मानते और ढोते रहेंगे या फिर मानेंगे कि भारत का संविधान एक ऊर्जस्वी और जीवंत दस्तावेज है, जो संवेदनशील है, बदलते समय के अनुरूप समाज की मानसिकता में होते परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए तद्नुसार अपने को ढालने में सक्षम है। यह आज का यक्ष प्रश्न है, जिसकी उपेक्षा करना कतई हितकर नहीं होगा।

स्टार फुटबॉलर रोनाल्डो के बचाव में उतरे पुर्तगाल के प्रधानमंत्री

लिस्बन (पुर्तगाल)। पुर्तगाल के प्रधानमंत्री एंटोनियो कोस्टा बलात्कार के आरोप में घिरे स्टार फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो के बचाव में उतरे। स्पैनिश द्वीप लैंजारोते पर शनिवार को एक टेलीविजन चैनल से बातचीत में कोस्टा ने कहा कि जब तक दोष साबित नहीं हो जाता तब तक रोनाल्डो को बेगुनाह माना जाए। उन्होंने कहा कि लोगों को यह बात समझनी होगी कि जब तक किसी को दोषी ना ठहराया जाए तब तक वह बेगुनाह है। किसी पर कोई आरोप लगने मात्र से वह दोषी नहीं हो जाता है। उन्होंने कहा, ''अगर हमारे पास किसी चीज का सबूत है तो वह यह है कि वह एक प्रतिभाशाली पेशेवर, एक असाधारण खिलाड़ी, अद्भुत फुटबॉलर और सम्मानित व्यक्ति हैं तथा उन्होंने पुर्तगाल को सम्मान दिलाया तथा निश्चित तौर पर हम यह कामना करते हैं कि कोई भी बात रोनाल्डो के रिकॉर्ड पर धब्बा नहीं लगाए।'' गौरतलब है कि गत सप्ताह कैथरीन मायोर्गा ने अमेरिका में एक दीवानी मुकदमा दायर कर आरोप लगाया कि रोनाल्डो ने साल 2009 में लास वेगास में उससे बलात्कार किया था। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। बहरहाल, रोनाल्डो ने आरोपों से इनकार किया है। रोनाल्डो के इतालवी क्लब ने उनका समर्थन किया है और उन्हें ''बड़ा चैम्पियन'' बताया है लेकिन उनके प्रायोजक नाइकी और वीडियो गेम निर्माता ईए स्पोर्ट्स ने आरोपों पर चिंता जताई है।

अंडर-19 एशिया कप : श्रीलंका को हराकर भारत ने रिकॉर्ड छठी बार जीता खिताब

हर्ष त्यागी को 'मैन ऑफ द मैच' और यशस्वी जासवाल को 'मैन ऑफ द टूनार्मेंट'' के पुरस्कार से नवाजा गया।

ढाका (एजेंसी)।

यशस्वी जायसवाल के 85 रनों के बाद हर्ष त्यागी (38/6) की शानदार गेंदबाजी के दम पर भारत ने श्रीलंका को 144 रन से हराकर अंडर-19 एशिया कप क्रिकेट टूनार्मेंट का खिताब अपने नाम कर लिया। भारत ने छठी बार अंडर-19 एशिया कप का खिताब जीता है। शेर-ए-बांग्ला नेशनल स्टेडियम में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने तीन विकेट पर 304 रन का मजबूत स्कोर बनाया और फिर श्रीलंका को 38.4 ओवर में 160 रन पर ढेर कर दिया। भारत की ओर से यशस्वी जयसवाल ने 113 गेंदों पर आठ चौके और एक छक्का लगाया। उनके अलावा कप्तान प्रभसिमरन सिंह ने 37 गेंदों पर तीन चौकों और चार छक्कों की मदद से 65 रन बनाए। हर्ष को 'मैन ऑफ द मैच' और यशस्वी को 'मैन ऑफ द टूनार्मेंट' के पुरस्कार से नवाजा गया।

हर्ष और यशस्वी क्रमशः बने 'मैन ऑफ द मैच' और 'मैन ऑफ द सीरीज'

आयुष बदोनी ने 28 गेंदों पर नाबाद 52 रन की तूफानी पारी में दो चौके और पांच छक्के उड़ाए। वहीं देवदत्त पडिकल ने 31 रन का योदान दिया। श्रीलंका के लिए कालना परेरा, काल्हा सेनारत्ने और डुलित वेलालेग ने एक-एक विकेट चटकाए। भारत से मिले, 305 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्रीलंकाई टीम नियमित अंतराल पर विकेट गंवाने के चलते 38.4 ओवर में 160 रन पर सिमट गई। श्रीलंका के लिए निशान मदुस्का ने 49, नवोद प्रणवितना ने 48 और प्रसिंदू सूर्यबांद्रा ने 31 रन बनाए। भारत की ओर से हर्ष त्यागी ने 24 रन देकर सर्वाधिक छह विकेट अपने नाम किए। उनके अलावा सिद्धार्थ देसाई ने 37 रन पर दो विकेट और मोहित जांगड़ा ने 18 रन पर एक विकेट हासिल किए।

अर्जुन तेंदुलकर की घातक गेंदबाजी के आगे ढेर हुई गुजरात

नई दिल्ली। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले भारत के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के बाद अब उनके बेटे ने भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाना शुरू कर दिया है। अर्जुन लगातार शानदार गेंदबाजी करते हुए अपनी चमक बिखेर रहे हैं। इस बार अर्जुन ने मुंबई की अंडर-19 टीम से खेलते हुए वीनू मांकड़ ट्रॉफी 2018 में गुजरात के खिलाफ जबरदस्त गेंदबाजी करते हुए 5 विकेट झटके। इस मैच में अर्जुन ने 30 रन देकर 5 विकेट लिए, जिसरी बदौलत उनकी टीम को 9 विकेट से आसान जीत मिली। अर्जुन ने अपनी गेंदबाजी में 8.1 ओवर में 1 मेडन डालकर 5 विकेट लिए। अर्जुन ने गुजरात के दत्तेश शाह (0), प्रियेश (1), एलएम कोचर (8), जयमीत पटेल (26) और ध्रुवांग पटेल (6) को अपना शिकार बनाया। उन्हीं की गेंदबाजी की बदौलत गुजरात की टीम 49.2 ओवरों में 149 रन पर ढेर हो गई। छोटे स्कोर का पीछा करने उतरी मुंबई ने 38 ओवरों में एक विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। मुंबई के ओपनर ओपनर सुवेन पारकर ने नाबाद 67 और दिव्यांच 45 ने मुंबई के लिए पहले विकेट के लिए 108 की साझेदारी की। इसके बाद प्रग्नेश कानपिल्लेवर (नाबाद 27) और पारकर ने 38 ओवरों में टीम को आसान जीत दिलवा दी

विजय हजारे ट्रॉफी : टूर्नामेंट के इतिहास में दोहरा शतक बनाने वाले पहले बल्लेबाज बने करनवीर

देहरादून। विजय हजारे ट्रॉफी के इतिहास में दोहरा शतक लगाने वाले करनवीर कौशल देश के पहले क्रिकेटर बन गए हैं। अंतरराष्ट्रीय वनडे क्रिकेट में दोहरे शतक लगाने वाले रोहित शर्मा, सचिन तेंदुलकर और विरेंद्र सहवाग जैसे दिग्गज बल्लेबाज घरेलू क्रिकेट में जो ना कर सके, वो उत्तराखंड के करनवीर कौशल ने कर दिखाया। शनिवार को सिक्किम के खिलाफ प्लेट ग्रुप के मुकाबले में करनवीर ने 202 रन की आतिशी पारी खेली। उन्होंने पहले 50 रन 38 गेंदों में बनाए। फिर 100 रन तक पहुंचने के लिए महज 33 गेंदें खेलीं।

शतक के बाद करनवीर आक्रामक होते चले गए। 30 गेंदों में करनवीर ने 50 रन बनाकर 150 का आंकड़ा छुआ और 31 गेंदों में फिर 50 रन बनाकर ऐतिहासिक तौर पर दोहरा शतक अपने नाम कर लिया। करनवीर 135 गेंदों में 202 रन बनाकर आउट हुए। लेकिन, इससे पहले उत्तराखंड की टीम 300 का आंकड़ा पार कर चुकी थी। करनवीर ने अपनी पारी में 126 रन सिर्फ चौकों और छक्कों की मदद से बनाए हैं। उन्होंने कुल 18 चौके और 9 छक्के जड़े। इससे पहले विजय हज़ारे ट्रॉफी मे सर्वाधिक व्यक्तिगत स्कोर का रिकॉर्ड भारतीय टीम के उप कप्तान आजिंक्य रहाणे के नाम था। उन्होंने मुम्बई के लिए खेलते हुए 2007-08 में 187 रन महाराष्ट्र के खिलाफ बनाए थे।

एसीए से सीखा क्रिकेट का पहला पाठ

करनवीर कौशल ने क्रिकेट का पहला पाठ नौ साल पहले अभिमन्यु क्रिकेट एकेडमी (एसीए) देहरादून में कोच मनोज रावत से सीखा। उनके पिता निर्मल कुमार शर्मा यूपी पुलिस में हैं और मां राधा कौशल उत्तराखंड सचिवालय में कार्यरत हैं। करनवीर ने शुरुआती पढ़ाई स्कॉलर्स होम से की और 10वीं जसवंत मॉडर्न स्कूल की। एचएनबी गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय से पढ़ाई के दौरान करनवीर ने नॉर्थ जोन प्रतियोगिता में भी भाग लिया। बीते साल यूपी के टीम कैंप में भी वो हिस्सा ले चुके हैं।

जिम्बाब्वे को तीसरा वनडे हरा दक्षिण अफ्रीका ने किया क्लीनस्वीप

पार्ल (एजेंसी)।

सलामी बल्लेबाज रिजा हेंड्रिक्स और हेनरिच क्लासेन की अर्धशतकों की मदद से दक्षिण अफ्रीका ने शनिवार को यहां जिम्बाब्वे को चार विकेट से हराकर तीन मैचों की एक दिवसीय श्रृंखला में 3-0 से क्लीन स्वीप किया। जिम्बाब्वे ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.3 ओवर में 228 रन बनाये। दक्षिण अफ्रीका ने 4.1 ओवर शेष रहते ही छह विकेट के नुकसान पर लक्ष्य हासिल कर जिम्बाब्वे का सूपड़ा साफ किया।

हेंड्रिक्स ने 66 और क्लासेन ने 59 रन बनाये। हेंड्रिक्स ने पहले विकेट के लिए एडिन मार्कराम के साथ 75 रन की साझेदारी की। उन्होंने 82 गेंद की पारी में पांच चौके और एक छक्का लगाया। मैन ऑफ द मैच क्लासेन ने 67 गेंद की पारी में छह चौके और एक छक्का लगाया। उन्होंने दो कैच और एक स्टंप भी किया।

इससे पहले सीन विलियम्स के अर्धशतक से जिम्बाब्वे श्रृंखला में पहली बार चुनौतीपूर्ण स्कोर बना सका। विलियम्स ने 79 गेंद में 10 चौके जमाकर 69 रन की पारी खेली। उन्होंने और ब्रेंडन टेलर (40) ने बल्लेबाजी के लिये अच्छी पिच पर चौथे विकेट के लिये 73 रन की भागीदारी निभायी।

टेलर इस दौरन एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 6000 रन पूरा करने वाले अपने देश के तीसरे बल्लेबाज बने। इससे पहले यह कारनामा एंडी और ग्रांट फ्लावर ही कर सके हैं। जिम्बाब्वे को पहले दो मैचों में 117 और 78 रन से हार का मुंह देखना पड़ा था। दोनों टीम अब तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की श्रृंखला में एक दूसरे के खिलाफ खेलेगी जो मंगलवार से शुरू होगी।

कप्तान विराट कोहली ने आईसीसी के इस नए नियम को लेकर जताई चिंता

बेंगलुरु (एजेंसी)।

राजकोट। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली ने शनिवार को आईसीसी के उस नए नियम पर चिंता व्यक्त की जिसमें पानी पीने के लिए ब्रेक केवल विकेट गिरने या ओवरों के बीच में ही लिया जा सकता है तथा उन्होंने उम्मीद जताई है कि मैच अधिकारी बाहरी कारकों जैसे गर्मी को भी ध्यान में रखें।

आईसीसी के 30 सितंबर से लागू हुए नए नियमों के अनुसार पानी पीने का ब्रेक केवल विकेट गिरने या फिर ओवरों के बीच में ही लिया जा सकता है लेकिन अंपायर की सहमति से कभी भी ब्रेक लिया जा सकता है। भारत और वेस्टइंडीज के बीच यहां पहले टेस्ट के तीनों दिन तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक रहा, दोनों टीमों के खिलाडियों ने अंपायरों की निगरानी में ड्रिंक बेक लिए।

कोहली ने कहा है कि अंपायरों ने नए नियम के अनुसार हमें ज्यादा पानी नहीं पीने दिया। लेकिन इन चीजों को ध्यान रखना चाहिए कि हम कैसी परिस्थितियों में खेल रहे हैं। इस सतर्कता से ओवर गति में सुधार हुआ। कोहली ने कहा है कि खिलाड़ी इस मैच में काफी परेशान हुए क्योंकि नियमों में कुछ परिवर्तन हुआ है।

खिलाडियों के लिए बल्लेबाजी और क्षेत्ररक्षण करते हुए 40-45 मिनट तक पानी नहीं पीना काफी मुश्किल था। मुझे पूरा भरोसा है कि इस पर ध्यान दिया जाएगा। बल्लेबाजी करते हुए चेतेश्वर पुजारा ने ड्रिंक ब्रेक की पांबदी को देखते हुए अपनी जेब में छोटी बोतल रखी, जिसमें से वह पानी पीते रहे।

इस खिलाड़ी की गलती से टेस्ट में 100 का औसत नहीं बना पाए महान बल्लेबाज ब्रैडमैन

मेलबर्न। डॉन ब्रैडमैन केवल चार रन से टेस्ट क्रिकेट में 100 का प्रतिशत हासिल नहीं कर पाए थे और उनके साथी नील हार्वे पिछले 70 वर्षों से इस अपराध बोध में जीते रहे हैं कि यह महान बल्लेबाज अगर यह विशिष्ट उपलब्धि हासिल करने से चूक गया तो वह भी इसके लिए उतने ही जिम्मेदार थे जितने कि इंग्लैंड के लेग स्पिनर एरिक होलीज। ब्रैडमैन जब अपनी आखिरी पारी खेलने के लिए उतरे तो उन्हें टेस्ट क्रिकेट में 100 का प्रतिशत हासिल करने के लिए केवल चार रन की दरकार थी।

होलीज ने ब्रैडमैन को उनकी अंतिम पारी में शून्य पर बोल्ड कर दिया था और उनका औसत 99.94 पर अटक गया। हार्वे को भी तब ऐसा कोई आभास नहीं था लेकिन अब लगता है कि उन्होंने ब्रैडमैन को आंकड़ों के लिहाज से महत्वपूर्ण आंकड़ा छूने से वंचित किया। यह ब्रैडमैन के आखिरी मैच से एक मैच पहले की घटना है। लीड्स में खेले गए मैच में तब किशोर हार्वे ने पहली पारी में 112 रन बनाए। वह दूसरी पारी में तब क्रीज पर उतरे जब ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए केवल चार रन की दरकार थी और उन्होंने पहली गेंद पर ही चौका जडक़र टीम को जीत दिला दी। ब्रैडमैन उस समय दूसरे छोर पर 173 रन बनाकर खेल रहे थे और अगर यह विजयी चौका उनके बल्ले से निकला होता तो इस समय उनका औसत 100 होता।

हार्वे आठ अक्टूबर को अपना 90वां जन्मदिन मनाएंगे लेकिन उन्हें अब भी वे चार रन कचोटते हैं। सिडनी मॉर्निंग हेरल्ड के अनुसार हार्वे ने कहा है कि लीड्स में बनाए गए उन चार रन से मैं आज भी अपराधबोध से ग्रस्त हो जाता हूं। यह पूरी तरह से मेरी गलती थी जो ब्रैडमैन टेस्ट क्रिकेट में 100 का औसत हासिल नहीं कर पाए। अगर वे चार रन मेरे बजाय उन्होंने बनाए होते तो वह यह उपलब्धि हासिल कर लेते। उन्होंने 27 जुलाई 1948 के उस दिन को याद करते हुए कहा कि मैं क्रीज पर उतरा। लंकाशर के तेज गेंदबाज केन क्रैन्सटन ने मेरे लेग स्टंप पर गेंद की और मैंने उसे मिडविकेट पर चार रन के लिए खेल दिया। दर्शक मैदान पर उमड़ पड़े और मुझे अब भी याद है कि ब्रैडमैन जोर से चिल्लाये, 'चलो बेटे।

पूर्व खिलाड़ियों का कहना, शॉ को अपनी तकनीक में और सुधार की जरूरत

राजकोट (एजेंसी)।

पृथ्वी शॉ भारत की तरफ से पदार्पण मैच में शतक जड़कर अपेक्षाओं पर पूरी तरह से खरा उतरे लेकिन पूर्व क्रिकेटरों का मानना है कि विदेशों की कड़ी चुनौतियों से निबटने के लिये इस किशोर बल्लेबाज को अपनी तकनीक में और सुधार करने की जरूरत है। शॉ ने वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में पदार्पण करते हुए एक मंझे हुझे बल्लेबाज की तरह से बल्लेबाजी की और शतक बनाया। उन्होंने मजबूत आक्रमण का सामना नहीं किया लेकिन फिर भी यह करियर की शानदार शुरुआत रही।

बैकफुट पर जाकर लगाये गये उनके शाट से वेस्टइंडीज के आलराउंडर कार्ल हूपर को कैरेबियाई क्रिकेट की याद आ गयी लेकिन उनका मानना है कि साव की आक्रामक शैली और वर्तमान तकनीक के साथ इस 18 वर्षीय बल्लेबाज के लिये विदेशों की कड़ी परीक्षा में पास होना आसान नहीं होगा।

हूपर ने कहा, ''देखने से लगता है कि उसके अंदर प्रतिभा छिपी है लेकिन वह गेंद की लाइन में आकर नहीं खेलता। उसे बैकफुट पर जाकर खेलना पसंद है और विकेट के स्क्वायर में खेलता है। यहां तो यह चल जाएगा लेकिन बल्ले और शरीर के बीच काफी अंतर होने से इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया में उसे परेशानी हो सकती है।''

पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज और 2003-04 के आस्ट्रेलिया दौरे में नयी गेंद का अच्छी तरह से सामना करने वाले आकाश चोपड़ा की राय साव की तकनीक को लेकर भिन्न है। उनका भी मानना है कि साव को अपने खेल में पैनापन लाने की जरूरत है लेकिन उन्होंने कहा कि अगर वीरेंद्र सहवाग अपरंपरागत तरीके से सफल हो सकता है तो फिर यह किशोर खिलाड़ी भी उसके साथ सफलता हासिल कर सकता है।

चोपड़ा ने कहा, ''हमने अभी जो देखा वह अभी केवल ट्रेलर है। वह काफी प्रतिभावान लग रहा है। आप इसमें विपक्ष और पिच के सपाट होने जैसे नुक्स नहीं निकाल सकते हो। लेकिन उसकी परीक्षा विदेशों में होगी और मुझे विश्वास है कि वह इससे अवगत होगा।''

उन्होंने कहा, ''अभी एक दो चीजें और मुझे पूरा विश्वास है कि वह इन पर काम रहा होगा। इनमें से एक उनका मूवमेंट है जो कि अभी आईपीएल से भिन्न लग रहा है। मैं बहुत चिंतित नहीं हूं। उसने शानदार शुरुआत की थी।'' साव को बहुत करीब से देखने वाले मुंबई के अमोल मजूमदार का मानना है कि अभी इस युवा बल्लेबाज की तकनीक को लेकर टिप्पणी करना सही नहीं होगा और इसके लिये उनके विदेशों में खेलने तक इंतजार करना चाहिए।

मजूमदार ने कहा, ''मुझे नहीं लगता कि उन्हें बहुत अधिक बदलाव करने की जरूरत है। हर खिलाड़ी की खेल की अपनी शैली होती हैं। उसकी शैली आक्रामक है और उसे इसे जारी रखना चाहिए। हमें उसके इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया में खेलने तक इंतजार करना चाहिए तभी हम इस बारे में बात कर सकते हैं।''

सूरत। स्वं रिझवानी उसमान की जन्म जयंती पर स्वंधर्म संकल्प सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह आयोजन पांडेसरा के बड़ोत गांव में किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में लोग जुटे और कांग्रेस के दिग्गज नेता हाजिर हुए जैसे राजब्बर, अहमद पटेल, परेश धनाणी सहित समस्त शहर के बड़े कांग्रेसी नेता पहुंचे।

कामकाज का निरीक्षण करके जानकारी ली गई

विधानसभा अध्यक्ष ने स्टेच्यू ऑफ यूनिटी की मुलाकात की

यह प्रॉजेक्ट से सरदार पटेल का नाम दुनिया भर में प्रसिद्ध होगा और पर्यटन पर आवागमन शुरू होगाः राजेन्द्र त्रिवेदी

राजपीपला । गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष राजेन्द्र त्रिवेदी ने और गुजरात के मुख्य सचिव जेएन. सिंघ ने केवडीया कोलोनी में सरदार सरोवर नर्मदा बांध साइट और साधु टेकरी के निकट विश्व में सबसे ऊंची सरदार वल्लभभाई पटेल साहब की १८२ मीटर की स्टेच्यू ऑफ यूनिटी प्रॉजेक्ट के निर्माण के अंत में पहुंच चुकी प्रॉजेक्ट की मुलाकात ली और इसके कामकाज का निरीक्षण करके इसकी प्रगति की जानकारी ली गई । इसके अलावा बडौदा विधायक जीतेन्द्रभाई सुखडीया सहित उनकी टीम के सदस्य भी इस मुलाकात में शामिल हुए । राजेन्द्र त्रिवेदी ने इस अवसर पर बताया है कि, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी में दुनिया भर से बड़ी संख्या

में प्रवासी आयेंगे और सभी मुख्यमंत्री, दुनियाभर में से बड़ी संख्या में प्रवासी यहां आनेवाले है और यह प्रॉजेक्ट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा आगामी समय में इसका लोकार्पण होगा अब यह प्रॉजेक्ट की स्थल स्थिति और प्रगति की खुद जानकारी लेकर प्रॉजेक्ट का निरीक्षण लेने के लिए रविवार को मुलाकात की है । सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम दुनियाभर में यह प्रॉजेक्ट से प्रसिद्ध होगी और पर्यटन शुरू हो जाएगा तब गुजरात को मैं अभिनंदन देता हूं । यह देश को एक और अखंडित रखनेवाले सरदार के यह प्रॉजेक्ट का अद्भूत प्रसंग जीवनभर यादगार बना रहेगा । फिलहाल करीब ३५०० श्रमिकों और २५० इंजीनियर रात-दिन लगातार यह कामकाज कर रहे है । प्रवासियों के लिए एयरपोर्ट के जैसे ट्रावेल्स तथा इलेक्ट्रोनिकली ओपरेटेड छोटी कार की व्यवस्था भी की गई है ।

बांध के टोप पर 'ए' फ्रेम की मुलाकात लेकर बांध में करायेला जलसंग्रह का भी राजेन्द्र त्रिवेदी ने निरीक्षण किया । रविवार को सुबह में सरदार सरोवर बांध का स्तर १२७.५१ मीटर पर थी । यह दरवाजा सील लेवल १२१.९२ मीटर पर पानी की गहराई ५.६० मीटर दर्ज की गई है ।

सूरत। सूरत सोशियल फेर फाउंन्डेशन के द्वारा काली पुल इलाके में ब्लड कैम्प का आयोजन किया गया।

परप्रांतियों पर हमले को लेकर भाजपा ने कड़ी आलोचना की

अहमदाबाद । परप्रांतियों पर हो रहे हमले को लेकर आरोपबाजी का दौर भी शुरू हो गया है । गुजरात के उपमुख्यमंत्री नीतिन पटेल ने आरोप लगाते हुए कहा है कि, परप्रांतियों पर हमला के लिए कौन जिम्मेदार है यह सभी लोग जानते है । परप्रांतियों पर हो रहे हमले के मामले में अब कांग्रेसी नेता अल्पेश ठाकोर ने उनके समुदाय पर हो रहे आरोपों को बेबुनियाद बताया है । ठाकोर समुदाय पर हिंसा करने के आरोपों को बेबुनियाद बताते हुए कांग्रेसी नेता अल्पेश ने कहा है कि, इस प्रकार के आरोप आधार बिना के है ।

अंतिम संस्कार रामनाथपरा स्मशान में किया गया

राजकोट में एक साथ उठी ७ अर्थी, हर आंख से आंसू छलके

मुख्यमंत्री विजय रुपाणी के द्वारा यात्रियों के परिजनों को ५ लाख रुपये की सहायता देने की घोषणा की गई

राजकोट। राजकोट से चारधाम की यात्रा पर निकले यात्रियों की बस शुक्रवार शाम को गंगोत्री दर्शन करके वापस आ रहे थे तब उनकी मीनिबस उत्तराखंड के भीरवाडी से १० किमी. दूर ६० फीट गहरे खाई में गिर गई थी । भयंकर दुर्घटना में राजकोट के ८ व्यक्ति सहित १० की मौत हुई थी । गत दिन एयरफोर्स के विमान द्वारा शवों को राजकोट लाया गया । जिसमें गत दिन एक व्यक्ति का अंतिम संस्कार किया गया था । जबकि एक साथ ७ अर्थी निकलने पर हर आंख से आंसू छलक उठे ।

अंतिमयात्रा में सीएम की पत्नी अंजलीबहन रुपाणी सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए है । शहर के रामनाथपरा स्मशान में सभी मृतकों के अंतिम संस्कार करना हो सभी अंतिमयात्रा रामनाथपरा पहुंच गई थी । सांसद मोहन कुंडारिया, मुख्यमंत्री विजय रुपाणी की पत्नी अंजलीबहन रुपाणी और मेयर बीनाबहन आचार्य भी रामनाथपरा स्मशान में पहुंच गये । मृतकों के परिजनों को सांत्वना दी गई । चारधाम की यात्रा पर गये कडीया समाज के एक साथ ८ मौत होने पर समाज पर जैसे कोई बड़ी समस्या आ गई ।

मृतको की यादीं.....

(१) हेमराजभाई बेचरभाई रामपरीया (उ.व. ५५) जागनाथ सोसाइटी, राजकोट
(२) मगनभाई शामजीभाई सापरीया (उ.व. ६२) विवेकानंद सोसायटी, राजकोट
(३) भगवानजीभाई भवानभाई राठोड (उ.व. ५०) रामेश्वर सोसायटी, राजकोट
(४) चंदुभाई तुलशीबाई टांक (उ.व. ६२) रामेश्वर सोसायटी, राजकोट
(५) भानुबेन देवजीभाई टांक (उ.व. ५५) गायत्रीनगर, राजकोट
(६) देवजीभाई हीरजीभाई टांक (उ.व. ६२) गायत्रीनगर, राज कोट
(७) गोदावरीबेन भगवानजीभाई राठोड (उ.व. ६०) रामेश्वर सोसायटी, राजकोट
(८) कंचनबेन हेमराजभाई रामपरीया, जागनाथ सोसायटी, राज कोट

पुलिस नवरात्री में असामाजिक तत्वों पर निगरानी रखेगी

अहमदाबाद । नवरात्री त्यौहार के दौरान गरबा खेलने के लिए युवतियों और महिलाओं की सुरक्षा के लिए शहर पुलिस प्रशासन द्वारा विशेष करके अलग-अलग महिला स्कवोर्ड की रचना की गई है । नवरात्री के दौरान अलग-अलग क्षेत्रों में और स्थलों पर महिला पुलिस साधारण ड्रेस में असामाजिक तत्वों पर निगरानी रखेगी और युवतियों या महिलाओं से छेडछाड़ करनेवाले असामाजिक तत्वों को गिरफ्तार किया जाएगा। दूसरी तरफ युवतियों और महिलाओं को भी ऐसे तत्वों से सावधान रहने की विशेष सूचना दी गई है। नवरात्री के दौरान और युवतियों और महिलाओं की सुरक्षा के लिए शहर पुलिस द्वारा विशेष करके महिला पुलिस विभाग द्वारा अलग तैयारियां और आयोजिन किया गया है।

नवरात्रि पहले खेलैया अंतिम तैयारी में व्यस्त हो गये है।

नवरात्रि को अब कुछ ही दिन बाकी रहे है तब माता के मंदिर की आरती के लिए इलेक्ट्रोनिक्स ढोल बनाने की प्रक्रिया चरमसीमा पर है।

महादेव मीडिया
रोहताश यादव 9924144499, 7015339195
वीजिटिंग कार्ड, बिल बुक, लेटर पैड, बेनर, पोस्टर, आदि का डिजाइन बनवाने के लिए संपर्क करें। (हिन्दी, गुजराती)
हिन्दी, गुजराती न्युज पेपर डिजाईन करवाने के लिए संपर्क करें।
304 केवल कॉम्पलेक्ष नवा गाम, डिंडोली, उधना सूरत।

सूरत। रविवार को उधना तीन रास्ता के निकट विश्वकर्मा समाज के सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में विश्वकर्मा समाज के लोगों ने शिरकत की।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100**, E-mail: krantisamay@gmail.com